ISSN 2454-5287

J. H. Journal Of Higher Education

A Peer Reviewed National Journal

Jan. 2016 (Vol. IV)

A Multidisciplinary Journal of Higher Education in Humanaties, Science & Commerce

साक्षात्कार : अनुसंधान की एक सशक्त पद्धति

लोकेश कुमार नरवरे
शोधार्थी
डॉ. बी.आर. अम्बेडकर शास. महाविद्यालय
आमला, जिला बैतूल (म.प्र.)
धीरज गुप्ता
अतिथि ग्रन्थपाल
ज.हॉ.शास. स्नातकोत्तर अग्रणी महाविद्यालय, बैतूल

साक्षात्कार शब्द के निर्माण पर विचार किया जाए तो इस शब्द के मूल में 'अक्ष' शब्द है, जिसका अर्थ ''आँख'' होता है। ''अक्ष'' में ''स'' उपसर्ग जोड़कर ''साक्ष'' शब्द बनता है, तत्पश्चात् ''साक्षात्'' शब्द की निर्मिती होती है, जिसका शाब्दिक अर्थ ''आँखों के सामने'' होता है। ''साक्षात्' शब्द में कार प्रत्यय लगाकर ''साक्षात्कार'' शब्द बनता है। इस शब्द–निर्मिती क्रम में देखा जाए तो स्पष्ट है कि किसी व्यक्ति अथवा वस्तु को आमने–सामने देखना ही साक्षात्कार है। प्रयोजनीयता की दृष्टि से ''साक्षात्कार'' शब्द के विविध क्षेत्रों अलग–अलग अर्थ लिये जा सकते हैं। साक्षात्कार एक तरह का चक्रव्यूह है, एक संवाद युद्ध है। यह एक व्यक्ति के मन के अंदर विस्फोट कराने वाली क्रिया भी है।

साक्षात्कार शब्द अंग्रेजी के ''इन्टरव्यू'' शब्द का समानार्थी है, जिसका अर्थ है – देखना, साक्षात् करना, आमने–सामने होकर बातचीत करना और अनुभव करना। इस परिप्रेक्ष्य में पी.वी. यंग का कथन है – ''साक्षात्कार को एक क्रमबद्ध प्रणाली माना जा सकता है, जिसके द्वारा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के आन्तरिक जीवन में अधिक या कम कल्पनात्मक रूप से प्रवेश करता है, जो उसके लिए सामान्यतः तुलनात्मक रूप से अपरिचित है।''[1] वस्तुतः साक्षात्कार दो व्यक्तियों के मध्य होने वाली सामान्य अथवा असामान्य वार्ता है। यह विचारों से जुड़ा होता है, जिसका सामाजिक प्रसंगों में अत्यधिक महत्व होता है। इसमें किसी व्यक्ति, समूह या समाज से संवाद के द्वारा उसके विचारों, कृतित्व–व्यक्तित्व, भावनाओं, जीवन दर्शन और राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय मान्यताओं आदि को समझा जा सकता है। साक्षात्कार के द्वारा उन पहलुओं को उजागर किया जा सकता है, जो समाज के लिए अपरिचित व अनछुए हों। साक्षात्कार की सहायता से किसी विशिष्ट व्यक्ति के बाह्य एवं आंतरिक रूप का विशेष अध्ययन भी किया जा सकता है।

साक्षात्कार एक सामाजिक अंतःक्रिया है। इसके घटित होने वाले मूल घटक हैं – साक्षात्कारकर्ता (साक्षात्कार लेने वाला), साक्षात्कारदाता (साक्षात्कार देने वाला), साक्षात्कारकर्ता व साक्षात्कारदाता के मध्य संवाद, पात्रों का आंतरिक एवं बाहरी व्यक्तित्व, पात्रों का दृष्टिकोण आदि हो सकते हैं। साक्षात्कार में वक्ता व श्रोता की स्थिति बदलती रहती है। साक्षात्कार लेने वाला जब किसी विषय के परिप्रेक्ष्य में प्रश्न करता है, तब वह वक्ता और साक्षात्कारदाता जब उत्तर देता है, तब वह वक्ता होता है।

साक्षात्कार एक कला है। अनुसंधान की इस पद्धति में साक्षात्कारकर्ता का अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है। प्रायः यह मान लिया जाता है कि साक्षात्कारकर्ता, साक्षात्कारदाता से छोटा अथवा निम्न कोटि का होता है या साक्षात्कार कोई भी ले सकता है, परन्तु ऐसा नहीं है। साक्षात्कार की अंतःक्रिया में साक्षात्कार की सफलता या विफलता साक्षात्कारकर्ता के व्यक्तिगत गुणों, सहनशीलता, बौद्धिकता, ईमानदारी, धैर्य और कुशलता पर निर्भर करती है। साक्षात्कारकर्ता को अपने विषय–क्षेत्र का विद्वान होना चाहिए, जिससे कि वह साक्षात्कार को समाज और अनुसंधान के लिए उपयोगी बना सके। साक्षात्कारकर्ता का सबसे महत्वपूर्ण गुण पक्षपातहीनता, निष्पक्षता एवं मौलिकता का है, क्योंकि शोध की ये प्रमुख शर्तें हैं।

साक्षात्कार विद्या का दूसरा महत्वपूर्ण घटक है – साक्षात्कारदाता या जिसका साक्षात्कार लिया जाता है, सामान्यतः व्यक्ति विशेष होता है। वह राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक खेल आदि किसी क्षेत्र से भी हो सकता है। वह कोई फिल्मी हस्ती भी हो सकता है, वह आम आदमी भी हो सकता है। साक्षात्कारदाता को मधुरभाषी, स्पष्टवादी, हाजिरजवाबी होना चाहिए। साक्षात्कारदाता के विचारों में गंभीरता व सत्यता होना अति आवश्यक है और यह उसका सबसे महत्वपूर्ण गुण है।

साक्षात्कार में संवाद का प्रमुख स्थान है। ''संवाद साक्षात्कार का महत्वपूर्ण आधारभूत घटक है। दोनों पक्षों के संवाद ही उनमें संबंध स्थापित करते हैं। दोनों पक्षों का समाज और देश से संबंध बनाने का काम भी संवाद ही करता है। संवाद के माध्यम से ही साक्षात्कार विधा आकार लेती है। वार्तालाप के बिना साक्षात्कार लिया ही नहीं जा सकता। संवादों में यह ध्यान रखा जाता है कि वे ऐसे हो, जो कुशलतापूर्वक इच्छित जिज्ञासा पर सामने वाले पात्र के विचारों, मनोभावों और दृष्टिकोण आदि को समेट ले।''[2] इस तरह हम देखते हैं कि संवाद साक्षात्कार का केन्द्र बिन्दु है। इसलिए साक्षात्कार को संवाद युद्ध की संज्ञा से भी अभिचिन्हित किया गया है।

साक्षात्कारदाता व साक्षात्कारकर्ता दोनों पात्रों के व्यक्तित्व भी साक्षात्कार के महत्वपूर्ण घटक है। साक्षात्कारकर्ता व साक्षात्कारदाता दोनों का बाहरी एवं आन्तरिक व्यक्तित्व साक्षात्कार विधा को प्रभावित करते हैं। साक्षात्कारकर्ता अपनी विशेष संवाद–शैली से साक्षात्कारदाता के व्यक्तित्व को उद्घाटित कर पाठकों के समक्ष रख देता है। साक्षात्कारकर्ता को पूर्व में ही अपना दृष्टिकोण स्पष्ट कर देना चाहिए कि वह किस व्यक्ति विशेष से किस विषय पर संवाद कर रहा है, जिससे कि साक्षात्कार सामाजिक सरोकार एवं शोध हेतु उपयोगी सिद्ध हो सके।

इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि साक्षात्कार का संचालन एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जिसमें सर्वप्रथम साक्षात्कारदाताओं से सम्पर्क स्थापित करना पड़ता है। साक्षात्कारदाता से पहले तिथि व स्थान का चयन कर सही समय पर साक्षात्कार लेने के लिए पहुंचना चाहिए। साक्षात्कार से पहले ही प्रथम संपर्क में उसे ध्यान रखना चाहिए कि पोषाक भड़कीली न हो तथा व्यवहार बनावटी न हो। साक्षात्कार लेने वाले को सर्वप्रथम